Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 3, April-2021, ISSN 2230-7540

आस्था का केन्द्र: राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवी-देवताओं का स्थल और उनका महत्व

Dr. Rani Mahto*

Assistant Professor, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar, Rajasthan

सारांश - *राजस्थान का इतिहास वीरों की वीरता और बलिदानों की घटनाओं से भरा पड़ा है। हर युग में महान पुरूष अवतरित हुए है जो जाति पांति जन्म व वर्ण के भेत को नही मानते हुए समस्त मानव जाति को अपने समान मानते आये है। ऐसे पुरूष देश, समाज और धर्म की मर्यादाओं का पालन करते हुए, अपने संपूर्ण जीवन को लोकहित में लगा देते हैं। उनके चरित्र उन्हें आदर्श बना देते हैं। वे अपने कार्यो के कारण दूसरे के लिए उदाहरण स्वरूप बन जाते हैं। ऐसे लोकवीर, लोकदेवता के रूप में पूज्य हो जाते हैं। सारांशतः कहा जा सकता है कि राजस्थान में वीरता, त्याग, बलिदान, गोरक्षा, वचन पालन, सत्य व्रतधारी, परोपकार और गुणों को स्थापित करने वाले ऐतिहासिक पुरूषों में से कुछ अधिक प्रेसिद्ध हो गये, जिन्हे सामान्य जनता ने बहुत सम्मान दिया और आदर प्रकट करने की भावना के कारण इन त्यागी पुरूषों को देव तुल्य मानने लगी जो कालान्तर में लोक देवता के रूप में पूजनीय हो गये। आज भी इन लोक देवताओं के प्रति राजस्थान की जनता आस्था रखती है और इन लोक देवताओं की पवित्र भूमि पर पहुंच कर माथा टेकती है।*

मुख्य शब्द - *राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवी-देवताओं का स्थल एवं महत्व*

----------X----------

भूमिका

राजस्थान का इतिहास वीरों की वीरता और बलिदानों की घटनाओं से भरा पड़ा है। हर युग में महान पुरूष अवतरित हुए है जो जाति पांति जन्म व वर्ण के भेत को नही मानते हुए समस्त मानव जाति को अपने समान मानते आये है। वीर पुरूष जन कल्याण की भावना से अपने जीवन में त्याग, बलिदान, सेवा और उदारता आदि गुणों को अपना कर, अमर बन जाते हैं। ऐसे पुरूष देश, समाज और धर्म की मर्यादाओं का पालन करते हुए, अपने संपूर्ण जीवन को लोकहित में लगा देते हैं। उनके चरित्र उन्हें आदर्श बना देते हैं। वे अपने कार्यो के कारण दूसरे के लिए उदाहरण स्वरूप बन जाते हैं। ऐसे लोकवीर, लोकदेवता के रूप में पूज्य हो जाते हैं।

समाज में व्यवस्थाएं बनाए रखने के लिए समय-समय पर कुछ नियम बनते रहते हैं। इन नियमों में आवश्यकता पड़ने पर कुछ परिवर्तन भी होता रहता है। वह नियम मानव मात्र के लिए लाभदायक हैं, यह ध्यान में रखा जाता है। इन नियमों का आधार जाति अथवा वर्ण का भेद नहीं होता है। ऐसे मानव हितकारी नियमों का धारण करना अर्थात उनके अनुसार चलना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। इनका पालन लोक धर्म का मानना है। इन नियमों के पालन में जो व्यक्ति अटूट साहस दिखाता है, वह आदर्श के रूप में प्रसिद्व हो जाता है। यही आदर्श पुरूष समाज में एक लोकदेवता के रूप में मान्य हो जाता है।

आदर्श वीर अपनी प्रसिद्धि के कारण लोकप्रिय हो जाता है। दंतकथाओं और विरूद गाने वालों द्वारा उनकी चरित्रगाथा प्रसार तथा प्रचार पाती रहती है। कई कल्पित और अमानवीय घटनायें उनके जीवन के साथ जुड़ जाती हैं। उस भू-भाग में उनके पराक्रम के गीत बढ़-बढ़कर गाए जाने लगते हैं। मौखिक परंपरा के कारण कथाओं का प्रसार होते समय कई अंश छूट जाते हैं, कई अंशो का रूप बदल जाता है तो कई अन्यों की कथाओं के अंश जुड़ जाते हैं। यह घटना, बढ़ना और परिवर्तन होने का सिलसिला लगातार चालू रहता है। इसी कारण इसे मौखिक साहित्य का नाम दिया जाता है जिसका रचियता और रचनाकाल अज्ञात रहता है। यही कारण है कि लोक देवताओं के संबंध में प्रमाणिक इतिहास खोज निकालना कठिन हो जाता है। मौखिक परंपरा वाले लोक साहित्य के आधार पर ही इन वीर आदर्श पुरूषों का जीवन चरित्र खोजना पड़ता है।

www.ignited.in

इन आदर्श वीर पुरूषों के जन्म स्थान, निवास स्थान, कार्य क्षेत्र और देहांत के स्थान भी प्रसिद्ध हो जाते हैं। उनकी स्मृति में ऐसे स्थानों पर कुछ निर्माण कार्य भी हो जाता है। इनके प्रशंसक अथवा भक्त ऐसे स्मारकों को तीर्थस्थल की मान्यता दे देते हैं। वहां पर समय-समय पर मेले भी लगने लग जाते हैं, तो भी और अज्ञानी लोग चमत्कारों की झूंठी कथायें इन वीर पुरूषों के स्मारकों के साथ जोड़ देते हैं जिससे यात्रियों की भीड़ चढ़ावा चढ़ाकर आमदनी बढ़ाती रहती है। करामात और चमत्कार की आशा में भोली जनता हजारों की संख्या में वहां पर आकर्षित होती रहती है। कि वीर आदर्श पुरूष अमुक देवता का अवतार है। जब अवतार की कल्पना प्रचारित की जाती है तो उसके संगी साथी भी अवतार के अंश रूप घोषित कर दिये जाते हैं।

ऐसे लोक देवताओं का इतिहास अपने सही रूप में समय के साथ विलुप्त हो जाता है। परंतु मौखिक रूप में उनके जीवन और उनकी शक्तियों का बखान तथा उससे संबंधित स्थानों का महत्व लगातार प्रचारित होता रहता है। समाज में हर काल में आदर्श पुरूष तो होते ही है। परंतु चरम सीमा का त्याग व साहस का प्रदर्शन करने वाले विरले पुरूष ही लोक देवता का सम्मान प्राप्त करते हैं। भले ही समय के साथ उनका सही इतिहास समाज भूल जावे परंतु उनके आदर्श चरित्र सदैव स्मरण करने और अनुकरण करने के विषय रह जाते हैं।

ऐसे आदर्श पुरूषों केक सद्कार्य उनके पराक्रम होते हैं। जिन्हें राजस्थानी भाषा में पवाड़ा कहते हैं। यह पवाड़े गीत के रूप में लोक समुदाय रचता है जिसमें वीर पुरूष के पराक्रमों (चरितों) का गुणगान होता है। इन चरित्रों को जब गद्य रूप में कहानी के रूप में कहते हैं। तो उसे राजस्थानी में बात कहते हैं। इन चरितों की घटनाओं का क्रमबद्ध (धारा प्रवाह) चित्रण किसी पट्ट (कपड़े) पर करते हैं तो उस चित्रित किसी पट्ट को राजस्थानी में फड़ कहते है इन चित्रित घटनों को समझाकर अथवा गीतों द्वारा बखान कर संकेत किया जाता है तो उसे फड़ बाचना कहते हैं। फड़ वाचने का काम भोपे करते है। रस्सियों के सहारे चित्रित फड़ को बांधकर दिवाल की तरह खड़ी तान दिया जाता है। भोपा अपनी वेशभूषा पहिनकर, अपनी स्त्री (भोपी) के संग फड़ के समाने आता है। वह लंबा लाल अंगरखा, गोटे किनारी वाला पहिनकर, सर पर पगड़ी बांधता है। पैरों में घुंघरू और बांये हाथ में तात का बाजा (रावण हत्था) लिए रहता है। वह घूम-घूमकर, पांवां का ठपका देकर, बाजे पर तान निकालकर विरूद गाता है। वह जिस घटना का वर्णन करता है उस पर भोपी दिए (दीपक) द्वारा प्रकाश डाली है। भोपी हाथ में तेल का दिया लटकाएं रहती है। भोपे के अलाप में गीत की टेक को वह तार स्वर में दुहराकर अलाप भरती है। वह बांचना देर रात तक चलता है। गांवो की तारा छांई रात के शांत वातावरण में लोक वीरों का गुणगान बहुत भारी प्रभाव सुनने वालों पर डालता है। इन लोक वीरों के पवाड़े और फड़े इनके चरित को अमर बना देती है। ज्ञान और मनोरंजन का यह अपूर्व साधन है।

राजस्थान के लोक साहित्य में वीर पुरूषों के जो चरित गीतों, पवाड़ों फड़ों आदि द्वारा बखाने जाते हैं उनसे कुछ लाभप्रद और शिक्षाप्रद निष्कर्ष किाले जा सकते हैं। इन लोकमान्य देवताओं के प्रशंसक अथवा भक्त सभी जाति और मत-मतांतर वाले होते है। जाति और पांति का भेद भाव इनमें नहीं बदला जाता। सभी प्रांतों में बिना किसी वर्ण भेद के इन लोक देवताओं की मान्यता ग्रामीण समाज में बहुत अधिक है। यह अपने उपदेशों में सरल और हितकारी बातों पर जोर डालते हैं। किसी अन्य मत अथवा धर्म की निंदा नहीं करते है। इनका संबंध किसी मर्यादा अथवा प्राचीन धार्मिक शास्त्र से नहीं है। मनुष्य मात्र को विकार रहित जीवन व्यतीत करने का मार्ग बताते हैं। सत्य, दया, अहिंसा, दान, परोपकार आदि गुणों का प्रचार करते हैं। धर्म अथवा जाति के विरोध में कोई शत्रु भाव नहीं रखते हैं। ऐसे उपदेशों में मनुष्य से भेद भाव रखना अथवा छुआछूत रखना असंभव हैं। हिंदु समाज के यह अवगुण, इन लोक देवताओं के उपदेशों से दूर हो गए हैं। इसके कारण सभी जाति के लोग एक साथ मिलकर भजन-पूजन और प्रसाद ग्रहण करने में हाथ बंटाते हैं।

इन लोक देवताओं की भले ही भिन्न-भिन्न स्थानों पर गदियां (केंद्र) हों परंतु उपदेश के रूप में सभी एक ही भांति का मानव कल्याणकारी संदेश देते हैं। सच्चे रूप में यह संत का कार्य करते हैं जो मनुष्य ही नहीं, जीव मात्र के कल्याण की कल्पना रखते है। जाति, जन्म रूढ़िवादी धार्मिक मान्यताओं से हटकर, इन देवताओं का संदेश है। इनके नाम पर चली जो वाणियां मिलती हैं वे सारी निर्गुण भक्ति का उपदेश देती हैं। सारे संसार व जीवों को बनाने वाला एक ईश्वर है जो परम शक्तिमान है। वह अच्छे तथा बुरे कामों का फल देता है। पापी को दुःख भोगना पड़ता है और पुण्य करने वाला सुख भोगता है। मानव धर्म के मुख्य लक्षण इन उपदेशों में प्रकट हो जाते है। अच्छे जीवन बिताने के लिए मानव को काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, अहंकार, ईर्ष्या आदि विकारों से दूर रहने की सीख देते हैं। ये सारे उपदेश उनकी वाणियों में भरे पड़े हैं जो साधारण बोलचाल की भाषा में हैं। इनके समस्त उपदेशों का सार दो पंक्तियों में कहा जा सकता है कि उपकार से बढ़कर पुण्य नहीं और परपीड़ा से बढ़कर पाप नहीं।

इन लोक देवताओं की गुणगाथा ज्यों-ज्यों फैलने लगी त्यों-त्यों समय के साथ इनके जीवन चरित्र में अलौकिक घटनायें जुड़ने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि ये शक्ति के केंद्र माने जाने लगे और अंध विश्वास अथवा अज्ञानी लोगों ने इनके गुणों के पालन को भूलकर इनकी पूजा करने लगे। इन वीर पुरूषों ने

परिश्रम और त्याग से जो कार्य सफल किए वे इनके भक्त केवल इनका नाम जपकर, प्राप्त करना चाहने लगे। रोगी और निर्बल स्वास्थ्य लाभ करने तथा निर्धन भक्त शीघ्र धनवान बन जाने हेतु इनकी मनौती मानने लगे। इनकी मृत्यु स्थल, तीर्थ बन गए और वंहा की मिट्टी का तिलक होने लगा। यह सब अंध विश्वास का फल है। इन वीर पुरूषों की कथनी और करनी में अंतर नहीं रहा परंतु इनके भक्तों में केवल कथनी ही रह गई।

इन लोक देवताओं की धातु के पतरे पर बनी मूर्तियां अथवा प्रतीक (चिन्ह) जिन्हें लोक भाषा में फूल कहते हैं। लोग पहिनने लगे। इन्हें वे संकट निवारण का कवच मानने लगे। रात्रि भर जाग कर इनका यश गान गाते,जिसे जम्मा कहते है और फल की आशा करने लगे। कर्म करने से दूर रहने और सदाचार का पालन नहीं करने से कोई फल अंध विश्वासी लोगों को नहीं मिला। शिक्षा के प्रसार के साथ ज्ञान और विवेक का प्रचार अब होने लगा है। इनके फलस्वरूप अंध श्रद्धा का नाश भी होने लगा है। राजस्थान के गांवों मे अनेक देवताओं के स्थान है। यह देवता भी जाति और स्थान विशेष के कारण संख्या में बहुत ज्यादा हैं किन्तु यहा हम मुख्य पॉच लोग देवताओं का विवरण प्रस्तुत है-

बाबा रामदेवः-

राजस्थान एवं गुजरात में पीर और अवतारी बाबा के रूप में प्रसिद्ध बाबा रामदेव का जन्म सन् 1932 में तंवर वंश में जैसलमेर के रूणीजा गांव में हुआ। जहां अब रामदेवरा धाम है। उन्होंने समाज सुधार, अछूतोद्वार, जाति प्रथा उन्मूलन के लिए कार्य किया। साथ ही पश्चिमी राजस्थान में धर्मांतरण को भी रोका। उनका स्थान हिंदू-मुस्लिम सद्भाव का भी प्रतीक है जहां हर वर्ष भाद्रपद शुक्ल द्वितीय से एकादशी तक विशाल मेला आयोजित होता है।

गोगाजीः-

गोगाजी को राजस्थान के अलावा गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं पंजाब में भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु पूजते हैं। नागवंशीय चौहान गोगाजी का जन्म 946 ई. में ददरेवा (चुरू) में हुआ था। जहां के शासक उनके पिता थे। सर्पदंश के उपचार के लिए उनका समाधि स्थल गोगामेड़ी (हनुमानगढ़) विख्यात हैं। भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की नवमी को गोगानवमी मनाई जाती है एवं गोगामेड़ी में हर वर्ष विशाल मेला लगता है।

तेजाजी:-

नागों के देवता के रूप में तेजाजी भी प्रसिद्ध हैं। उनका जन्म 1574 ई. में खड़नाल (नागौर) में जाट समुदाय में हुआ था। वे बचपन से ही ईश्वर आराधना एवं जनकष्ट निवारण में संलग्न रहे। ब्यावर, अजमेर सहित जगह-जगह उनके स्थान बने हुए हैं। यहां सर्पदंश से पीडित व्यक्तियों को भोपों के पास विष चूसकर उपचार के लिए लाया जाता है। उनकी पुण्य तिथि पर नागौर जिले में भाद्रपद शुल्क पंचमी से पूर्णिमा तक विशाल मेला भी भरता है।

पाबूजी:-

जोधपुर जिले के कोलू गांव में राठौड़ वंश में जन्म लेने वाले पाबूजी अस्पृयता निवारण एवं सद्भाव-समरसता बढ़ाने के लिए प्रख्यात रहे। वे गौ-रक्षा के लिए संघर्ष करते हुए वीर गति को प्राप्त हुए थे। उन्हें लक्ष्मणजी का अवतार भी माना जाता है। ऊंट के अस्वस्थ होने पर भी पाबूजी की पूजा की जाती है। कोलू गांव में उनकी स्मृति में हर साल विशाल मेला आयोजित होता है।

देवनारायण जी:-

गुर्जर बगडावत वंश में 1243 ई. में आलासेरी डूंगरी (भीलवाड़ा) में उनका जन्म हुआ। वे जनकल्याण में संलग्न रहे एवं अनेक सिद्धियां प्राप्त की। गुर्जर समाज उन्हें भगवान विष्णु के अवतार के रूप में पूजता है। देहमाली गांव में भाद्रपद शुल्क सप्तमी को उनके समाधि स्थल पर देवधाम (टोंक) में भी मेला आयोजित होता है। अजमेर, भीलवाड़ा चितौड़ एवं टोंक में देवनारायण जी के अनेक देवरे भी है।

भर्तृहरिजी:-

अलवर शहर से करीब 30 किमी. दूर जयपुर मार्ग पर रमणीक धार्मिक स्थल पर भर्तृहरि बाबा का धाम है। वे उज्जैन के शासक थे लेकिन राजपाट और मोह माया त्याग कर योगीराज बन गये। उन्होंने भर्तृहरि नीतिशतक की रचना की जिसमें उचित लोक आचरण की महत्वपूर्ण सीख हर वर्ष यहां लक्खी मेले में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के अलावा नाथपंथी साधुओं का जमावड़ा लगता है।

कैलादेवीः-

करौली के यदुवंशी राजवंश की कुलदेवी कैलादेवी को दुर्गा का अवतार माना जाता है। मान्यता के अनुसार देवी को कारागृह में बंद कर कंस ने जिस कन्या का वध करना चाहा वह योगमाया थीं जो उसके हाथ से छूटकर अंतर्ध्यान हो गई थीं एवं कंस की मौत की आकाशवाणी हुई थी। यहीं योगमाया त्रिकूट पर्वत पर कैलादेवी के रूप में विराजमान हैं। प्राचीन काल में यहां घने

जंगल व आसपास व्याप्त नरकासुर के आतंक को भी उन्होंने ही समाप्त किया था। करौली मुख्यालय से करीब 25 किमी. दूर स्थित कैलादेवी मंदिर में चैत्रमास की शुक्ल अष्टमी को लक्खी मेले में गुर्जर, मीणा सहित बड़ी तादाद में श्रद्धालु उमड़ते हैं।?

शिलादेवीः-

आमेर के राजा मानसिंह (प्रथम) ने 16 वीं सदी में पूर्वी बंगाल की विजय के उपरांत शिलादेवी की प्रतिमा को राजमहल में प्रतिष्ठित किया था। वह जयपुर राजघराने की कुलदेवी भी हैं। संगमरमर से बने मंदिर में अष्टभुजी भगवती महिषासुर मर्दिनी की प्रतिमा प्रतिष्ठापित है। नवरात्र में यहां श्रद्धालु बड़ी संख्या में पहुंचते हैं।

करणीमाताः-

बीकानेर से 35 किमी. दूर देशनोक में करणीमाता के मंदिर में हजारों सफेद, काले व भूरे चूहे हैं। चारण समाज इन चूहों को अपना पूर्वज मानता है। सुवाप (जोधपुर) में जन्मीं करणीमाता जनसंरक्षक एवं गौरक्षक हैं। अलवर में बाबा किला क्षेत्र में भी उनका मंदिर स्थित है जहां नवरात्र में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है।

जीणमाताः-

सीकर से 15 किमी. दूर खोस गांव के पास जीणमाता के मंदिर में उनकी अष्टभुजा की प्रतिमा प्रतिष्ठापित हैं। यह मंदिर पृथ्वीराज प्रथम के समय बना था और जीणमाता चौहानों की कुलदेवी भी हैं। मंदिर में नवरात्रा में दो बार चैत्र व अश्विन मास में मेला भरता हैं। यहां लाखों श्रद्धालु जात-जडूलों की रस्म एवं शीष नवाने के लिए आते हैं।

आई माताः-

नवदुर्गा का अवतार आाईमाता का विख्यात मंदिर बिलाडा में स्थित हैं। यह दीपक की ज्योति से केसर टपकने के लिए प्रसिद्ध है। मुल्तान सिंध से आई आई माता का पूजा स्थल बडेर कहलाता है जहां कोई प्रतिमा नहीं होती। वे सिरवी राजपूों की कुलदेवी हैं।

शाकंभरी माताः-

अकाल ग्रस्त लोगों को बचाने के लिए अपनी शक्ति से फल-सब्जियां और कंदमूल उत्पन्न करेन वालीं देवी शाकंभरी का मंदिर उदयपुरवाटी (झुंझुंनू) के पास घाटियों में स्थित हैं। वे खण्डेलवालों की कुलदेवी भी है। सांभर (जयपुर) एवं जहाजपुर (उ.प्र.) में भी सकराय माता या देवी शाकंभरी के मंदिर हैं। यहां नवरात्रों में बड़ी तादात में श्रद्धालु उमड़ते हैं।

शीतला माताः-

शीतलता की परिचायक माता शीतलादेवी संपूर्णता देने वाली एवं बच्चों को चेचक रोग को दूर करने वाली मानी जाती हैं। वैसे तो इनका स्थान हर जगह मिल जाता है लेकिन चाकसू में शील की डूंगरी पर बना मंदिर विख्यात है। जयपुर से आगरा जाने वाले मार्ग पर भावगढ़ बंधा में हर वर्ष देवी के वाहन गर्दभ का विशाल मेला लगता है।

नारायणी माताः-

नारायणी माता का प्राचीन मंदिर अलवर जिले की राजगढ़ तहसील में है। यह मंदिर 11 वीं सदी में निर्मित हुआ था। यहां हर वर्ष बड़ी संख्या में श्रद्धालु जात-जडूले की रस्म एवं सवामणी के लिए आते है। सैन समाज की कुलदेवी नारायणी माता का धाम सभी वर्गों की आस्था का केंन्द्र है।

आशापुरा देवीः-

बिस्सा जाति की कुलदेवी आशापुरा देवी का विशाल मंदिर पोकरण से करीब डेढ़ किमी. दूर स्थिति है। वे सभी मनोकामनाएं पूरी करने वाली मानी जाती है। खास बात यह है कि आशापुरा देवी के उपासक मेहंदी नहीं लगते एवं मेहंदी शब्द का प्रयोग भी नहीं करते । उनके मंदिर में भाद्रपद एवं माघ पक्ष की शुक्ल दशमी को महोत्सव का आयोजन होता है।

आउवा की कुलदेवी:-

आउवा की कुलदेवी-(सुगाली माता) पूरे मारवाड़ क्षेत्र की जनता की आराध्य देवी रही हैं। तीन फीट साढ़े आठ इंच और दो फीट पॉच इंच चौडी इस देवी प्रतिमा के दस सिर और चौप हाथ हैं। काले पत्थर से निर्मित यह प्रतिमा आउवा ठाकुर की कुलदेवी हैं। सन् 1857 के स्वाधनीता संग्राम में भी यह प्रतिमा स्वाधीनता सेनानियों की प्रेरणा-स्त्रोत रही है।

मगरमंडी माता नीमाजः-

पाली जिले के नीमाज से दक्षिण-पूर्व में करीब दो किलोमीटर दूर सुरम्य प्राकृतिक परिवेश में स्थित मगरमंडी माता का मंदिर स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। अलंकृत मंच यह आयताकर जगती पर स्थित यह पंचरथ मंदिर गुर्जर प्रतिहार शैली का है। लगभग नवीं शताब्दी के इस सांधार मंदिर में देवी-देवताओं और दिक्पालों की कलात्मक प्रतिमाएं बनी हुई हैं। तथा इसके अलंकरण युक्त स्तम्भ तत्कालीन मंदिर स्थापत्य एवं तक्षण कला के परिचायक है।

www.ignited.in

निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता हैं कि वीर पुरूष जन कल्याण की भावना से अपने जीवन में त्याग, बलिदान, सेवा और उदारता आदि गुणों को अपना कर, अमर बन जाते हैं। ऐसे पुरूष देश, समाज और धर्म की मर्यादाओं का पालन करते हुए, अपने संपूर्ण जीवन को लोकहित में लगा देते हैं। उनके चरित्र उन्हें आदर्श बना देते हैं। वे अपने कार्यो के कारण दूसरे के लिए उदाहरण स्वरूप बन जाते हैं। ऐसे लोकवीर, लोकदेवता के रूप में पूज्य हो जाते हैं। सारांशतः कहा जा सकता है कि राजस्थान में वीरता, त्याग, बलिदान, गोरक्षा, वचन पालन, सत्य व्रतधारी, परोपकार और गुणों को स्थापित करने वाले ऐतिहासिक पुरूषों में से कुछ अधिक प्रेसिद्ध हो गये, जिन्हे सामान्य जनता ने बहुत सम्मान दिया और आदर प्रकट करने की भावना के कारण इन त्यागी पुरूषों को देव तुल्य मानने लगी जो कालान्तर में लोक देवता के रूप में पूजनीय हो गये। आज भी इन लोक देवताओं के प्रति राजस्थान की जनता आस्था रखती है और इन लोक देवताओं की पवित्र भूमि पर पहुंच कर माथा टेकती है।

संदर्भः-

1. ओझा, गोरीशंकर हीराचन्द - राजपूत कालीन, राजस्थान ग्रन्थागार, जोधपुर-2002
2. ओझा, मधुसूदन - मत्स्य प्रदेश का इतिहास सीटी पैलेस म्यूजियम, जयपुर
3. त्यागी, ओंकार सिंह - राजस्थान एक नजर, अरिहंत प्रकाशन, जयपुर
4. जोशी, पिनाकी लाल- अलवर का इतिहास, हिन्द प्रेम मंदिर, अलवर
5. शर्मा, गोपीनाथ - राजस्थान का इतिहास, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा
6. गहलोत, महावीर सिंह - राजस्थान के लोक देवता, युनिक ट्रेडर्स, जयपुर

Corresponding Author

Dr. Rani Mahto*

Assistant Professor, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar, Rajasthan